

Future Political Set-up of Delhi

+

Shri Indrajit Gupta:
 Shri Prabhat Kar:
 Shri Naval Prabhakar:
 Shri Prakash Vir Shastri:
 Shri Jagdev Singh
 Siddhanti:
 Shri Surendra Pal Singh:
 Shri Mohammad Elias:
 Shri J. B. Singh:
 Shrimati Renu
 Chakravartty:
 Shri Yashpal Singh:
 Shri Bhagwat Jha Azad:
 Shri P. R. Chakraverti:
 Shri K. N. Tiwary:
 Maharajkumar Vijaya
 Ananda:
 Shri Bibhuti Mishra:
 *229. Shri Narendra Singh
 Mahida:
 Shri Solanki:
 Shri Narasimha Reddy:
 Shri D. C. Sharma:
 Dr. L. M. Singhvi:
 Shri Ram Sewak Yadav:
 Shri Ramachandra Ulaka:
 Shri Dhuleshwar Meena:
 Shri Dinen Bhattacharya:
 Shri Kolla Venkalah:
 Shri D. D. Mantri:
 Shri R. Barua:
 Shri Maheswar Naik:
 Shri Onkar Lal Berwa:
 Shri P. C. Borooah:
 Shri Vishwa Nath Pandey:
 Shri Rameshwar Tantia:

Will the Minister of Home Affairs be pleased to state:

(a) whether any decision has been taken regarding the future political set-up of Delhi; and

(b) if not, the reasons for the delay?

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Hathi): (a) and (b). The matter is under active consideration.

Shri Indrajit Gupta: In view of the fact that the Government has been telling us for a good many years that this matter is under consideration, may

we know what are the special reasons, if any, which are preventing the Government from coming to a decision regarding the almost unanimous demand of the people of Delhi and the various political parties for an elected Assembly?

Shri Hathi: It is not years since the matter is under consideration. But the question is, so far as the Assembly and the full statehood is concerned, the Government is not inclined to accede to that. Short of that, whatever can be done is being proposed and the proposals are being discussed on that basis. They all know and all the proposals that are being discussed are on this basis, and that is why it has taken some time.

Shri Indrajit Gupta: May I know whether the reply which has been given means that the proposal or the formula, as it was, I think, called, by the late Govind Vallabh Pant with respect to this question of giving responsible government to Delhi, has been given the go-by for all time now?

The Minister of Home Affairs (Shri Nanda): It is the same formula which is being pursued.

श्री नवल प्रभाकर : ये जो राजनीतिक दल हैं उन से जो बातचीत हुई है, उस बातचीत के दौरान क्या उन के सामने कोई प्रोपोजल भी रखी गई है, यदि हां तो वे क्या भी और उन को उन्होंने ने कहां तक स्वीकार कर लिया है ?

श्री नन्दा : उसी ढंग की प्रोपोजल रखी गई है और उस के बारे में कई सुझाव मिले हैं उन लोगों से । लेकिन सब की सम्मति नहीं मिल सकी है जो स्कीम बन रही है उस के बारे में ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या गृह मंत्री श्री वह कहने की स्थिति में होंगे अन्तिम रूप से कि किस समय तक दिल्ली के राज-

नीतिक ढांचे के बारे में अन्तिम निर्णय दे दिया जायगा ?

श्री नन्दा : जहां तक हमारा सम्बन्ध है हम तो तैयार हैं आज ही अपना फैसला देने को लेकिन यह कोशिश है कि ज्यादा से ज्यादा लोग इस को मंजूर करें। और वह कोशिश जारी है। दूसरे चौथे दिन उन लोगों से मिलने का प्रबन्ध भी किया जाता है और बातचीत हो रही है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मेरा प्रश्न बड़ा स्पष्ट था। यह प्रश्न बहुत लम्बे समय से विचार का विषय बनता चला आया है। क्या गृह मंत्री जी आज यह बता सकते हैं कि महीने में या दो महीने में, एक सप्ताह में या दो सप्ताह में इस के बारे में अन्तिम निर्णय ले लिया जायेगा ?

श्री नन्दा : जिन लोगों का इस के साथ सम्बन्ध है, जिन के साथ मशिवरा होता है उन से मैं भी यही कह रहा हूँ और यही हो रहा है कि वे जल्दी राजी हो जायें ताकि भाग्य बड़ा जा सके।

श्री बागड़ी : समय तो बताया ही नहीं। इस जल्दी का क्या मतलब हुआ ?

अध्यक्ष महोदय : अब तो वह हिन्दी में कह रहे हैं। मैं क्या कह सकता हूँ।

श्री बागड़ी : मेरा निवेदन है कि . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये। बागड़ी साहब, आप तो एक श्रुप के जिम्मेवार लीडर हैं। उन्होंने जल्दी शब्द का प्रयोग किया है, तो क्या अब हम उस का स्पष्टीकरण करना शुरू कर दें ?

श्री जगदीश सिंह सिद्धान्ती : आप के जल्दी काम करने के रास्ते में बाधा कौन सी पड़ी है, यह मैं जानना चाहता हूँ ? क्यों आप इतनी देरी कर रहे हैं ?

अध्यक्ष महोदय : यही तो वह समझाते रहे हैं अब तक।

Shri Surendra Pal Singh: Before coming to a final decision in this regard, would the Government ascertain the wishes of the people who are living in the rural areas of Delhi as to whether they would like to remain in the new set-up or they would like to merge with the neighbouring States of Uttar Pradesh and Punjab?

Shri Nanda: The latter part of the question does not arise, and we are in touch with the representatives of the rural areas.

श्री यशपाल सिंह : सरकार बजाय इस के कि उन लोगों को राजी करे और उन की रजामन्दी ले, अपनी कमजोरी दूर क्यों नहीं करती है ? इस में वह समय बरबाद क्यों करती है ? वीक रूलर की बात दुनिया में कोई नहीं मानता है। जोर के साथ आप बात करें।

अध्यक्ष महोदय : श्री आजाद।

श्री भागवत झा आजाद : इतने दिनों के सम्मिलित प्रयत्नों के बाद भी अगर दिल्ली की विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ दिल्ली के भावी स्वरूप के सम्बन्ध में कोई निश्चय नहीं कर पाई हैं तो क्या दिल्ली की किसी प्रमुख राजनीतिक पार्टी ने जैसे कांग्रेस है या कोई अन्य दल है, आप के सम्मुख कोई सुझाव स्पष्ट रूप में तथा अन्तिम रूप में रखा है और अगर रखा है तो वह सुझाव क्या है ?

श्री नन्दा : कोशिश होगी कि ऐसा सुझाव दे दिया जाये।

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, जो जवाब दिया गया है क्या वह कहने लायक बात है। (Interruptions).

Shri Nanda: It is not a matter to be treated in this manner. It is a very serious answer. I have accepted the suggestion of the hon. Member be treated in this manner. It is a clear-cut scheme is placed before them.

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, प्रश्न यह नहीं था कि यह देंगे। प्रश्न यह था कि दूसरी पार्टियों ने दिया है या नहीं। इस तरह से वह नहीं बदल सकते हैं।

एक माननीय सदस्य : उन्होंने ने कहा दिलाया जायेगा।

श्री मधु लिमये : वह इस पद के लायक नहीं हैं, उन्हें हटाना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : मुझे एक बात अफसोस के साथ जरूर कहनी पड़ती है कि कभी तो हम यह खयाल करें कि हमारे ऊपर कितनी जिम्मेदारी आती है। हर एक मेम्बर को यह खयाल करना चाहिये। कुछ दिन से मेरे दिल में बहुत दुःख हो रहा है कि हम जो कार्रवाई यहां करते हैं वह उतनी शोभनीय नहीं होती जितनी पहले हुआ करती थी, और इस से हम सब की बदनामी होत है। हमें सारा संसार देख रहा है और यह मुल्क तो जरूर ही देख रहा है। मैं अपनी करूंगा और मैं चन्द एक मेम्बरों से भी कहूंगा कि वह जरा मेरे पास बैठें। मुझे बहुत दुःख हो रहा है इस बात पर।

डा० राम मनोहर लोहिया : इस में ऐसी क्या बात थी कि इतने गुस्से में जवाब दिया गया, और किसी बात का जवाब दिया भी नहीं गया।

श्री मधु लिमये : यह जिम्मेदारी सरकार की और मंत्रिमंडल की है।

अध्यक्ष महोदय : अगर थोड़े से मेम्बर भी यह इरादा कर लें कि उन को जरूर इकावट डालनी है तो उस में न स्पीकर कुछ कर सकता है और न हाउस कुछ कर सकता है। जब बोले ही चले जायेंगे (Interruption) किसी वक्त तो हद्द होनी चाहिये। जब मैं विनय कर रहा हूँ कि कुछ तो बोलना बन्द कीजिये, तब भी आप बोले चले जाते हैं।

श्री नौर्य : गृह मंत्री गुस्से में क्यों जवाब देते हैं।

अध्यक्ष महोदय : क्या आप इस का फसला करेंगे।

श्री नौर्य : आप ही फसला करेंगे।

अध्यक्ष महोदय : अगर मुझे करना है तो मैं करूंगा, आप बामोश रहिये।

डा० राम मनोहर लोहिया : दुनिया हिन्दुस्तान की तरफ देख रही है, लेकिन हिन्दुस्तान की शोभा इस मंत्रिमंडल ने बिल्कुल तबाह कर रखी है जरा इस के ऊपर भी ध्यान दिया जाये। एक प्रश्न गृह मंत्री से पूछा गया था कि क्या दिल्ली की किसी राजनीतिक पार्टी ने उनको आखिरी सुझाव दिया है। इस का वह जवाब देते हैं कि हम अपना आखिरी सुझाव बनायेंगे। आखिर कोई हद्द हुआ करती है। (Interruptions).

Shri Nanda: I never said that. It may be that a certain part of a question may be misunderstood. It may be clarified. I said it in the sense whether there was going to be a clear-cut scheme being given, and I said I shall try.

डा० राम मनोहर लोहिया : अपने गुस्से को जरा ठंडा करो तो ज्यादा अच्छा काम कर पाओगे।

श्री अ० प्र० जैन : वह कैसे बोल रहे हैं जरा इस पर भी गौर कीजिये।

प्रध्यक्ष महोदय : सवाल यह था कि प्राया जो पार्टियां, हैं, जो बड़ दल हैं उन की तरफ से कोई किलग्रर कट स्कीम आई है। अगर आई है तो उस को मंजूर कर के गवर्नमेंट जल्दी फैसला दे।

Shri Nanda: I thought the word was "final"—"either clear-cut or final" I have not received any such scheme. (Interruptions).

Mr. Speaker: Question Hour is over.

Shri Hari Vishnu Kamath: Under the proviso to rule 46, if the Home Minister is willing, Question 234 may be answered.

Mr. Speaker: It is not willingness. Only if it comes from him, it can be considered.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

पूर्वी पाकिस्तान से प्रश्नजन

- * 230. { श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धन्ती :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री प्र० चं० बहष्ठा :
श्री विभूति मिश्र :
श्री क० ना० तिवारी :
श्री बलजीत सिंह :
श्री रामचन्द्र उलाका :
श्री बुनेश्वर भीना :
श्री कपूर सिंह :
श्री प्र० क० बेब :
श्री नरसिम्हा रेड्डी :
श्रीमती ज्योत्सना चन्दा :
श्री स० मो० बनर्जा :
श्री यशपाल सिंह :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री मुहम्मद इलियास :
श्री बारियर :

क्या पुनर्वासि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) जनवरी, 1964 के बाद कितने

व्यक्ति पूर्वी पाकिस्तान से भारत आये हैं ;
और

* 231. (ख) विभिन्न राज्यों और संघ प्रशासित राज्य क्षेत्रों में शरणार्थियों के पुनर्वासि में अब तक क्या प्रगति हुई है ?

पुनर्वासि मंत्री (श्री त्यागी) : (क) प्राप्त सूचनाओं के अनुसार 1 जनवरी, सन् 1964 से 27 फरवरी, सन् 1965 तक 9,20,192 व्यक्ति पाकिस्तान से भारत आ चके हैं।

(ख) विभिन्न राज्यों और संघ प्रशासित क्षेत्रों में पूर्वी पाकिस्तान से आने वाले विस्थापितों के पुनर्वासि में की गई प्रगति के बारे में एक विवरण सभा की मेज पर रख दिया गया है। [पुस्तकालय में रखा गया, बेलिये संख्या एल० टी० 3902/65]

शिक्षा-विशारदों का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

- * 231. { श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री यशपाल सिंह :
श्री रा० गि० बुने :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री श्रींकार लाल बरवा :
श्री नुकुम चन्द कछुवाय :
श्री बड़े :
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :
श्री कृ० चं० पंत :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) शिक्षा-विशारदों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जो विगत 7 जनवरी, 1965 को समाप्त हुआ, किन किन महत्वपूर्ण शैक्षणिक विषयों पर चर्चा हुई और उससे भारत को क्या लाभ हुआ ;

(ख) सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों के नाम क्या हैं और उन्होंने क्या सिफारिशें की हैं।